मेरी झील

मुस्कुराती झील मेरी गुनगुनाती झील,
झिलमिलाती झील मेरी चमचमाती झील,
मन में अगर अवसाद हो या प्रेम का उत्साह,
दिल के पौरों को भिगोती गुदगुदाती झील,

बारिशों में झील से मोहित हो बादल झूमते,
उत्ताल लहरों से वो आलोड़ित किनारे चूमते,
मेघ से अभिसार करती खिलखिलाती झील,
मुस्कुराती झील मेरी गुनगुनाती झील,

गर्मियों की इक सुबह में झील पर तो आईये,
ठंडी हवा जो गाल को छूए तो मुस्कुराइये,
प्यार के जलरंग गाती, गुनगुनाती झील,
मुस्कुराती झील मेरी गुनगुनाती झील,

जब भी ठिठुरती सर्दियों में माँ सी ऊष्मा चाहिये,
आप रानी रोड़ पर चुपचाप चलते जाइये,
ऊर्जा का संचार करती गुनगुनी सी झील,
मुस्कुराती झील मेरी गुनगुनाती झील,

एक तड़के धुंध में इस पाल पर मैं जा रहा,
एक साया युवती सा मेरी तरफ ही आ रहा,
आंख में आंसू मलिन मुख भाव सा गहरा रहा,
मैं ही ये नीली झील हूँ कहने लगी अपनी कथा,
एक क्षण को ठिठक कर, सुन लो पथिक मेरी व्यथा,

कि कामधेनु सी प्रदाता एक जीवन रेख हूं,
इस शहर के भाल पर उत्कीर्ण स्वर्णिम लेख हूं,

इस प्रकृति के वरदान की थोड़ी सी कर लो बंदगी,
प्रार्थना करती हूं तुमसे डालिये मत गंदगी,

उसकी भीगी आँख से मेरा गला भी रूंध गया,
जैसे प्रदूषण तीर से मेरा हृदय ही बिंध गया,

तो कोमल हथेली झील की ले हाथ में मैंने कहा,
अब नहीं सहना पड़ेगा तुमने जो अब तक सहा,
ऐ दयालु जलपरी, जब भी उदयपुर आऊँगा,
बात जो तुमसे हुई सबको वहीं बतलाऊँगा,

फिर आप सबकी ओर से मैंने भरोसा दे दिया,
अधरों पे आंसू तोलकर मैंने दिलासा दे दिया,

कि किमती जेवर के जैसे सहजेंगे झील को,
कालजे की कोर जैसे, सब रखेंगे झील को,

ये सौगंध खायें आज हम सब, एक दृढ़ विश्वास से,
कि हम हमेशा गा सकेंगे गर्व से उल्लास से,

मुस्कुराती झील मेरी गुनगुनाती झील,
खिलखिलाती झील, मेरी चमचमाती झील,
खिलखिलाती झील, मुझसे प्यार करती झील,
खनखनाती झील, मेरे संग गाती झील,
मुस्कुराती झील, मेरी गुनगुनाती झील।

– मनोज कुमार शर्मा
रा.प्र.से.

उदयपुर में स्थित मेरी झीलों का वृहद् स्वरूप

संकलन यात्रा

''उदयपुर का वैभव–झीलें एवं संस्कृति'' का संकलन–लेखन कार्य वर्ष 2013 में प्रारम्भ होकर वर्ष 2023 में परिपूर्ण हुआ। इसे प्रारम्भ करने की प्रेरणा विज्ञान समिति, उदयपुर द्वारा 13 मई, 2013 को ''उदयपुर की झीलें एवं प्रबन्धन'' पर आयोजित एक संगोष्ठी से मिली। इस संगोष्ठी में उदयपुर के ख्यातिप्राप्त विषय विशेषज्ञों द्वारा झीलों के विभिन्न पहलुओं पर अपने लेख प्रस्तुत किये गये जिन पर सारगर्भित विवेचना की गई। इस समय मैं विज्ञान समिति का कार्यकारी अध्यक्ष एवं इस संगोष्ठी का प्रभारी रहा। इसके उपरान्त 9 व 10 अप्रेल, 2016 को प्रबुद्ध चिंतन प्रकोष्ठ–विज्ञान समिति द्वारा आयोजित संगोष्ठी ''उदयपुर स्मार्ट सिटी विजन डॉक्यूमेन्ट–2025'' में भी झीलों के वर्तमान स्वरुप, रखरखाव, प्रदूषण तथा विकास की भावी संभावनाओं पर विस्तार से विवेचन हुआ। इस समय मैं विज्ञान समिति का अध्यक्ष एवं संगोष्ठी निदेशक था। इन दोनों संगोष्ठियों से प्रेरणा प्राप्त करते हुए इस पुस्तक का संकलन–लेखन करने का विचार मन में आया। डॉ. के.एल. मेनारिया, पूर्व प्राध्यापक, रसायन शास्त्र एवं सदस्य, विज्ञान समिति ने भी मेरे इस विचार का समर्थन करते हुए पूर्ण सहयोग करने का आश्वासन दिया तथा इस पुस्तक के मुख्य अंश निर्धारण करने में उनका सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। इस बीच उनके असामयिक निधन से इस कार्य की निरन्तरता में कुछ शिथिलता महसूस हुई। मैं उनके प्रति श्रद्धा–सुमन अर्पित करते हुए अन्तर्मन से उनका आभार व्यक्त करता हूँ।

इस कार्य में उन सभी विषय–विशेषज्ञों जिनके लेख उपरोक्त संगोष्ठियों में पढ़े गये, उनसे इस पुस्तक की प्रारम्भिक सामग्री संकलित की गई। इसके साथ ही उदयपुर के राजमहल के केन्द्रीय पुस्तकालय एवं अन्य महानुभावों द्वारा लिखित ग्रंथों का अध्ययन कर प्रारम्भिक सामग्री को संशोधित आलेखों के परिवर्तित किया गया।

इसी क्रम में सूचना का अधिकार अधिनियम–2005 के अन्तर्गत विभिन्न राजकीय विभागों एवं स्वायत्तशाषी संस्थाओं से आवश्यक सूचनाओं को प्राप्त उन्हें इस पुस्तक में प्रमाणिक रूप से समाहित किया गया। इसी के साथ दैनिक समाचार पत्रों – राजस्थान पत्रिका, दैनिक भास्कर, दैनिक नवज्योति, प्रातःकाल आदि में प्रकाशित उपयोगी सामग्री एवं छायाचित्रों का संकलन किया गया। इसके अतिरिक्त इन्टरनेट की विभिन्न वेबसाइट्स यथा–गूगल, विकिपीडिया, उदयपुर के महत्वपूर्ण ऑनलाइन पोर्टल आदि के माध्यम से विविध प्रकार की उपयोगी जानकारी एवं फोटोग्राफ्स संकलित करते हुए उनका मूल आलेखों में समावेश किया गया। इस कार्य में मेरी पत्नी श्रीमती शकुन्तला धाकड़, श्री प्रकाश तातेड़, सम्पादन कार्य एवं टंकण, ग्राफिक कार्य कम्प्यूटर विशेषज्ञ श्री भेरूलाल तेली का विशेष योगदान रहा। सभी के प्रति आभार।

इस प्रकार इस पुस्तक का प्रस्तावित संकलन शनैः शनैः आगे बढ़ता गया। प्रारम्भ में इस पुस्तक को A-4 साइज के 500 पृष्ठों में प्रकाशित करवाना तय किया गया, लेकिन उपलब्ध स्थान, फोटोग्राफ्स के आकार एवं प्रस्तुतीकरण को ध्यान में रखते हुए इसकी साइज को A-3 पृष्ठ के आकार में परिवर्तित कर अंतिम रूप दिया गया तथा पृष्ठों की संख्या 500 ही रखी गई। समय के साथ इस संकलन को दो बार अंतिम रूप देकर इसके ब्लेक एण्ड व्हाईट एवं बहुरंगी प्रिन्ट निकलवाये गये। इस संकलन का सक्रिय कार्य वर्ष 2018 से प्रारम्भ हुआ। इन पाँच वर्षों में दो वर्ष कोविड–19 महामारी एवं इसके सुरक्षात्मक मापदण्डों को ध्यान में रखने के साथ मुझे हृदयाघात हो गया। बाद में बाइपास सर्जरी, ब्रेन स्ट्रोक, पुनः हृदयाघात के कारण करीब दो वर्षों तक इस कार्य में मेरी ओर से शिथिलता आ गई। इसके बाद ऑनलाइन प्लेटफार्म (टीम व्यूअर एवं एनि डेस्क) तकनीक के माध्यम से यह कार्य फिर से आगे बढ़ा। इसका प्रकाशन 'जीएमएसएल धाकड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन' एवं मुद्रण 'चौधरी ऑफसेट' द्वारा करवाया गया।

इस पुस्तक का मूल उद्देश्य उदयपुर शहर व आसपास की झीलों तथा धार्मिक व सांस्कृतिक धरोहरों के प्रति जागरूकता लाना है। हम सभी अपनी दैनिक गतिविधियों के साथ शहर, झीलों एवं विरासत को स्वच्छ एवं अतिक्रमण मुक्त रखने में सहभागी बन सकते हैं। महत्वपूर्ण विरासतों को सहजते हुए इनके सुनियोजित विकास में स्थानीय प्रशासन के साथ आमजन, बुद्धिजीवी, भामाशाह आदि भी अपनी अग्रणी भूमिका निभा सकते है।

इस पुस्तक की 500 प्रतियाँ प्रकाशित कर उदयपुर शहर के हित में लगभग 350 प्रतियाँ स्थानीय बुद्धिजीवी, प्रशासक, राजनेता, पार्षद, गणमान्य एवं सामान्य नागरिकों को सप्रेम भेंट की जावेगी। इसके साथ ही इसे 'जीएमएसएल धाकड़ चेरिटेबल फाउण्डेशन' की वेबसाइट के अतिरिक्त उपलब्ध संचार माध्यमों से अन्तरराष्ट्रीय, राष्ट्रीय, राज्य, संभाग तथा विश्वविद्यालय के विशिष्ट पुस्तकालयों तक पहुंचाकर इसमें संकलित सूचना अधिक से अधिक आम नागरिकों के मध्य उपलब्ध कराने का प्रयास किया जायेगा।

उदयपुर शहर को एशिया एवं दुनिया के कुछ सर्वश्रेष्ठ नगरों में विशिष्ट स्थान प्राप्त है। वर्ष उपरान्त वर्ष इसकी श्रेणी में उत्तरोत्तर वृद्धि हो। यह सब विरासत में मिली झीलों, बाग–बगीचों, हवेलियों, मन्दिरों एवं अन्य दर्शनीय स्थलों के फलस्वरूप ही प्राप्त हुआ है। इन स्थलों के पर्याप्त रखरखाव के साथ इनकी सुन्दरता में निरन्तर अभिवृद्धि के सार्थक प्रयासों पर सभी का चिंतन एवं मनन आवश्यक है।

पुनः मेरे सभी शुभ–चिन्तकों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इस पुस्तक के मूल उद्देश्यों को पूर्ण करने में यथासंभव सहयोगी बने, इसी आशा एवं विश्वास के साथ।

– एल.एल. धाकड़